22130093

International Baccalaureate®
Baccalauréat International
Bachillerato Internacional

HINDI A: LITERATURE – HIGHER LEVEL – PAPER 1
HINDI A : LITTÉRATURE – NIVEAU SUPÉRIEUR – ÉPREUVE 1
HINDI A: LITERATURA – NIVEL SUPERIOR – PRUEBA 1

Wednesday 8 May 2013 (morning)
Mercredi 8 mai 2013 (matin)
Miércoles 8 de mayo de 2013 (mañana)

2 hours / 2 heures / 2 horas

INSTRUCTIONS TO CANDIDATES

- Do not open this examination paper until instructed to do so.
- Write a literary commentary on one passage only.
- The maximum mark for this examination paper is *[20 marks]*.

INSTRUCTIONS DESTINÉES AUX CANDIDATS

- N'ouvrez pas cette épreuve avant d'y être autorisé(e).
- Rédigez un commentaire littéraire sur un seul des passages.
- Le nombre maximum de points pour cette épreuve d'examen est *[20 points]*.

INSTRUCCIONES PARA LOS ALUMNOS

- No abra esta prueba hasta que se lo autoricen.
- Escriba un comentario literario sobre un solo pasaje.
- La puntuación máxima para esta prueba de examen es *[20 puntos]*.

© International Baccalaureate Organization 2013

https://xtremepape.rs/

*नीचे दो उद्धरण दिए गए हैं, (1) तथा (2)। इन दोनों में से किसी **एक** पर साहित्यिक व्याख्या लिखिए।*

1.

क़मर पास आकर खड़ा हो गया तो उन्होंने पूछा, कहाँ से सवारी आ रही है ? जी, वह आज सण्डे है न, ग्यारह बजे से पार्क स्ट्रीट के एक रेस्त्रां में जैम सेशन होता है, वहीं से आ रहा हूँ।' "जैम सेशन ! क्या तुम लोग वहाँ जैम खाते हो ?" क़मर मुस्कराया, नहीं अब्बू , हम लोग चाय पीते हैं और कोई पार्टनर मिल जाए तो उसके साथ बीच-बीच में थोड़ी देर नाच लेते हैं। अच्छा ! "गोया आप हमारे कल्चर की ऐसी की तैसी करने जाते हैं वहाँ।"बरसों हमारे पुरखों ने हिन्दुस्तान हुकूमत की है।हमारे अदब-कायदे, नफ़ासत, शेर-ओ-शायरी! भला क्या कमी है हमारे कल्चर में ? अब्बू ! मैं आपसे बहस तो करना चाहता नहीं।ये सब जो हम करते हैं, वक्त का तकाजा है।लेकिन …क़मर कुछ कहते-कहते रूक गया। हाँ-हाँ, रूक क्यों गए, कहा क्या कहना चाहते हो ? अब्बू गुस्ताखी मुआफ़ हो, आप पुराने जमाने के आदमी ठहरे ये नए जमाने की बातें आपकी समझ में नहीं आएंगी। क़मर जाने लगा तो अब्बू ने टोका, सुनो, जल्दी से नहा डालो, मेरे पेट में चूहे कूद रहे हैं।अब्बू सोचने लगे, लड़का वैसे तो होनहार है।क्लास में बराबर पोजीशन लाता है।काम-काज में तेज है।एक मिनट भी खाली नहीं बैठता। बड़ा होगा, नौकरी चाकरी के चक्कर में पड़ेगा, घर-गृहस्थी बसेगी तो अपने आप सुधर जाएगा। रोज़ रोज की टोका-टोकी भी तो अच्छी नहीं होती।वह कहते हैं न कि "जब बाप का जूता बेटे के पैर में फिट बैठने लगे तो बाप को बेटे के साथ छोटा भाई का सा सलूक करना चाहिए।"वैसे आजकल के नौजवानों में जो बात उन्हें सबसे ज्यादा अखरती है वह खुदा की तरफ से उनकी बेरूखी का होना है।न नमाज पढ़ते हैं और नह ी रोज़े रखते हैं।कहते हैं लोगों को खुदा की ज़रूरत ही नहीं।अंगरेजी राज ख़त्म होने के बाद ईसाइयत अगर कहीं जिन्दा रही थी तो कलकत्ते में। मजा यह था कि यहाँ के गैर ईसाई भी बड़ा दिन और नया साल धूम-धाम से मनाते थे।इन्हें खाने पीने और खुशियाँ मनाने का बहाना चाहिए।बड़ा दिन और बड़ा साल नज़दीक आ रहा था।क़मर और उसके दोस्त बहुत जोश में थे।उस दिन ग्रैंड हॉटल में बूफ़े डिनर और नाच-गाने का ज़ोरदार प्रोग्राम रहता है।साठ रूपए का नुस्खा था। यकमुश्त पचास रूपए डिनर के और दस रूपए दाखिले की।क़मर ने निश्चय कर लिया था कि इस बार न्यू इयर ईव की रात को वह ग्रैंड हॉटल अवश्य जाएगा।उसने डरते-डरते अब्बू से जिक किया।उन्होंने खुशी–खुशी साठ रूपए निकाल कर उसकी हथेली पर रख दिए। निश्चित तारीख से एक दिन पहले क़मर ने अब्बू से गुज़ारिश की कि इस बार वे भी उसके साथ ग्रैंड हॉटल में डिनर खाने चले।अब्बू बोले, क्यों अपना मज़ा भी किरकिरा करना चाहते हो ? यार-दोस्तों के साथ जाओ और एन्ज्वाय करो। "आप चलकर तो देखिए, वहाँ बहुत से लोग ऐसे होंगे जिनकी उम्र आप से भी ज्यादा होगी।" उसने झिझकते हुए अब्बू की आँखों में झाँका।बहरहाल बेटे के इसरार करने पर अब्बू हुजूर चलने के लिए राज़ी हो गए।झट से उन्होंने नई शेरवानी पहनी, चूड़ीदार पाजामा और पॉलिश किए हुए जूते।फिर थोड़ा-सा हिना का इत्र गोया किसी बारात में शिरकत करने जारहे हों। घरवाले आश्चर्य से उनका मुँह ताक रहे थे।ग्रैंड हॉटल रंग बिरंगे बल्बों और फूल-पत्तियों से खूब सजा था।सामने की दीवार के साथ बड़ी-बड़ी मेज़ों पर जलते हुए गैस के चूल्हों पर डोंगों में तरह-तरह के पकवान सजे थे। बाप रे ! अब्बू की आँखें जैसे बाहर निकल आईं, खाने के लिए इतना सामान।मेरी तो देख कर तबीयत भर गई।अब्बू को सभी चीजें बहुत स्वादिष्ट लग रही थीं।चखते-चखते ही उनका पेट भर गया।हॉल में पश्चिमी संगीत की कोई बहुत मनमोहक धुन बज रही थी। "ओह अब्बू, यू आर ग्रेट !" "अब तुम हद से बाहर हो रहे हो" यह डैड-वैड मुझे नहीं अच्छा लगता, अपने बच्चों से तुम अपने आप को डैड कहलवाना, समझे ! माइक पर ऐलान किया जा रहा था कि अब डान्स सेशन शुरू होगा।जो लोग नाचने में दिलचस्पी रखते थे वे हॉल के बीचोंबीच खाली जगह में उतर आए, क़मर भी उठ खड़ा हुआ।उसने अब्बू की बाँह पकड़ कर कहा, आइए ! मुझे नहीं आता नाच-वाच, और मन ही मन उन्होंने क़मर को जैसे गाली दी, नालायक, गधा कहीं का, मेरा तमाशा बनाना चाहता है।क़मर ने आग्रह पूर्वक कहा,

https://xtremepape.rs/

आइए न, बहुत आसान है। मैं जैसे कदम बढ़ाऊँ, आप सामने वाला पैर ठीक उसकी उल्टी दिशा में आगे-पीछे बढ़ाते जाइए। यह कोई डिस्को फिस्को तो है नहीं। मियां साहब धडकते दिल और कॉपते कदमों से नाचते वालों के बीच पहुँच गए। कमर ने उनका बायां हाथ अपने हाथ में लिया दूसरा हाथ पीठ पीछे रखा और वह बाजे की धुन के साथ आगे-पीछे, दाएँ-बाएँ घूम घूम कर नाचने लगा। अब्बू भी साथ-साथ घिसट रहे थे, साथ ही कनखियों से इधर-उधर ताकते भी जाते थे कि कोई देख कर हँस तो नहीं रहा है ? बाकर साहब के घुटने दो-चार बार क़मर के पैरों और घुटनों से टकराए लेकिन फिर उन्हें कोई दिक्कत पेश नहीं आई। सोचा इस लड़के ने आज मुझे मॉडर्न बुद्ढा बना दिया, अब यह अगर मुझे डैड कहकर पुकारता है तो मैं ऐतराज नहीं करूँगा। इस बीच एक दबंग लड़की ने क़मर को आकर धकेल दिया और मुस्कराते हुए उसने बाक़र साहब को सीने से लगाकर नाचना शुरू कर दिया। लड़की ने उनके कान में कहा, क्यों घबराता है यू ओल्ड-आइ मीन यंग-मैन, हम तुम्हें खा नहीं जाएगा। लेकिन बाक़र साहब हाथ छुड़ाकर हांफते हुए अपनी मेज पर आ गए। उन्होंने अपनी जेब को टटोला। उनका बटुआ गायब था। लड़की अपना काम कर गई थी। उस भीड़ में बाक़र साहब की ऑखों ने उसे बहुतेरा तलाशा लेकिन वह नज़र नहीं आई। बाप-बेटा रात के एक बजे के करीब जब होटल से चले तो बाक़र साहब को ऐसा महसूस हो रहा था जैसे वे फिर से जवान हो गए हैं। उन्होंने मन ही मन क़मर का शुक्रिया अदा किया।

गिरीश अस्थाना, बुढ़ऊ का आधुनिकीकरण, *वागर्थ*, दिसम्बर (१९९९)

https://xtremepape.rs/

2.

जब बिकते नहीं

रोज बिकने शहर आता हूँ ,
गॉव से पॉव पैदल चलकर,
शहर के चौक-चौराहे पर
वस्तुओं के जमघट में शामिल हो,
एक टक निहारता हूँ , ग्राहकों की ओर
आशा भरी नज़रों से कि वे मुझे
खरीद लेंगे आज शाम तक के लिए।
वस्तु होकर भी वस्तु से भिन्न,
निर्जीव नहीं, सजीव हूँ
अगतिशील नहीं गतिशील हूँ
विक्रेता द्वारा नहीं,
स्वयं ग्राहकों के हाथो बिकने की फिक करता हूँ ।
अलग अलग ग्राहकों के हाथों बिक जाता हूँ
नित उनसे दुत्कार, झिड़कियॉ सुनता हूँ।
जिस दिन प्यार के दो बोल उनसे सुनता हूँ ,
मन आहलादित हो जाता है।
जिस दिन बिक जाता हूँ ।
वह दिन ईद का होता है ,
रोटी का जुगाड़ लिए
खुशी मन से घर लौटता हूँ।
मॉग- पूर्ति के खेल में
जिस दिन बिक नहीं पाता हूँ
उस दिन खाली हाथ
भारी मन, रोटी की चिंता में घर लौटता हूँ।
घर पहुँच, सूने घर की चौखट पर
व्याकुल मन से
घरनी की प्रतीक्षा करता हूँ ,
एक आशा लिए, कि वह
बीड़ी बनाकर लौटेगी
साथ में चंद रूपए लाएगी।

https://xtremepape.rs/

वह आश भी जब फलीभूत नहीं होता
तब कल की आश में
पहले तो उधारी गॉंव के बनिए से,
जब उम्मीदों का कल कभी नहीं आता
तब फिर महाजनों के शोषण चक्र में
फंसने को मजबूर हो जाता हूँ।
मौनसून के जूए में हारकर
गॉंव बंजर हो चला है
शहर में मचा है हाहाकार पानी का
घट गया है निर्माण कार्य
नामुमकिन हो गया है फिलहाल मेरा बिकना।

डॉ नागेश्वर शर्मा, *उत्तरा*, जुलाई (२००६)

https://xtremepape.rs/